www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अग्निहोत्र की गरिमा एवं महत्ता

— श्री रामशर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रमाङ्क–३५०

लेखक

श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक एवं मुद्रक

युग निर्माण योजना,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

१९८२

मूल्य-

पच्चीस पैसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अग्निहोत्र की गरिमा एवं महत्ता

गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता कहा गया है । दोनों के समन्वय एवं सहयोग से ही देव संस्कृति का जन्म एव विकास परिपोषण सम्भव हुआ है । गायत्री उपासना के साथ साथ यज्ञ प्रक्रिया का किसी न किसी रूपमें समावेश करनेका विधान है । भले ही वह अगरबत्ती या दीपक जला देने जितना स्वल्प एवं प्रतीकात्मक ही क्यों न हो—गायत्री उपासनामें प्राय: जप के साथ अगरबत्ती जलाते हैं । जिसने पूजा वेदी स्थापित की है वे दीपक, आरती, धूपबत्ती जैसे ज्योतिजलाने

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले उपक्रम रखते हैं। अग्नि पूजा अग्निहोत्र कहलाती है। उसका छोटा या बड़ा स्वरूप जहां जिससे बन पड़े अपने उपासनात्मक नित्य कर्म में सम्मिलित रखने का भी प्रयत्न करना चाहिए ताकि माता और पिता दोनों की समान रूप से पूजा-अर्चा, उपासना-अभ्यर्थना होती रहे।

भारतीय धर्मको यज्ञधर्म माना जाता है, उसमें यज्ञीय भावनाओं के अभिवर्धन को बहुत महत्व दिया गया है। यज्ञ शब्द का भावार्थ है-पवित्रता, प्रखरता एवं उदारता। यह तत्वदर्शन व्यक्तिगत जीवनमें भी समाविष्ट रहनाचाहिए और उसे लोक व्यवहार में भी उत्कृष्टता की प्रथा-परम्परा जैसा प्रश्रय मिलना चाहिए। जीवन यज्ञ की चर्चा शास्त्रों में स्थान-स्थान पर हुईहै। ब्रह्मयज्ञ, विश्वयज्ञ आदि नामों से समाज में यज्ञीय प्रवलन की प्रमुखता पर बल दिया गया है। पशुप्रवृत्तियों पर अंकुशलगाने, पतनोन्मुख प्रवाह को उत्कृष्टता की ओर मोड़नेके अनुबन्ध निर्धारण यज्ञ कहलाते हैं। इसी अवलम्बन के सहारे मानवी प्रगति सम्भव हुई है। वर्तमान की स्थिरता एवं उज्ज्वल भविष्य की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्भावना भी इसी सदाशयता के अवलम्बन पर निर्भर रहेगी ।

भारतीय धर्म में यज्ञ को असाधारण महत्व दियागया है । धर्म कृत्यों में उसकी प्रमुखता है । कोई भी धर्म कार्य ऐसा नहीं जो इस उपचार के बिना सम्भव होता हो । जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त भारतीय धर्मालम्बियों को सोलह बार संस्कारों की उपचार प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ता है । इनमें गर्भाविस्था का पुंसवन, बालक का नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारम्भ ऐसे हैं जिन्हें बाल्यकाल में करना होता है, उन सभी के कर्मकण्डों में यज्ञ विधान है । शास्त्र विधि से यदि उन उपचारों को करना हो तो यज्ञ-विधान भी उनमें अनिवार्य रूप से सम्मिलित करना होगा ।

यज्ञोपवीत संस्कार का नाम ही यज्ञ' की प्रमुखता के कारण हुआ है । यज्ञाग्नि में पवित्र किये गये उपनयन सूत्र को ही यज्ञोपवीत कहतेहैं । यह यज्ञकी साक्षी में ही धारण कराया जाताहै इसके उपरान्त विवाह संस्कारहै । विवाह

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ की साक्षी में ही सम्पन्न हो सकता है। उसी की सात परिक्रमायें करके वर-वधू दो जीवनों को एकात्मता के बन्धनों में बांधते हैं। इस अवसर के यज्ञ को दो लोहखंडों को अटूट रूप से जोड़ने वाले 'बेल्डिग' की उपमा दी जाती है। हिन्दू मृतकों का शरीर चिता में जलाया जाताहै और उस अवसर पर कुछ कृत्य उपचार किये जाते हैं। उस पर बारीकी से दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि प्रचलित चिन्ह-पूजा उस शास्त्रीय विधि-व्यवस्था का ध्वंसावशेष है जिसे 'अन्त्येष्टि' कहते हैं। अन्त्येष्टि विशुद्धि रूपसे एक यज्ञ प्रक्रिया है जो मृत शरीर की समाप्ति के लिए प्रयुक्त होती है।

इसके अतिरिक्त वानप्रस्थ, श्राद्ध, तर्पण आदि के और भी कई संस्कार उपचार भारतीय धर्मानुयायियों के होते हैं—इन सबमें अग्निहोत्र करना ही होताहै। पर्व-त्यौहारों पर घरों की देवियां अपना छोटा सा हवन उपचार चूल्हे से अग्नि निकाल कर उस पर घी, शकर, लौंग, मिष्ठान्न आदि चढ़ातीं और उस धर्मकृत्य की चिन्ह-पूजा स्वयंमेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर लेती देखी जाती हैं। किसी देवी-देवता की अभ्यर्थना में भी वे उसी उपचार को अपनातीहैं।

प्राचीनकाल में यह नियम था कि भोजन करने से पहले उसे अग्नि देवता की प्रखरता के प्रतीक परमेश्वर को प्रथम भोजन कराया जाय, उसके बाद स्वयं खाया जाय—इस परिपाटी के अनुसार रसोई में बने चिकनाई और मिठास वाले पदार्थों मे से पाँच ग्रास एक-एक करके पाँच बार में अग्निदेव पर चढ़ाये जाते थे। इसका विधि-विधान और मन्त्रभाग कुछ विस्तृत भी था और उसे बलि-वैश्व या पंच यज्ञ कहते थे। आज भी कितने ही धर्मप्रेमी परिवारों में यह प्रचलन छोटे रूपमें विद्यमान पाया जाता है। अधिक न बन पड़े तो भी पहले वे अग्नि मुख में पाँच छोटे ग्रासों की पांच आहुतियाँ गायत्री मन्त्र से देते एवं घी शक्कर के सहारे ज्योति ज्वाला जलाते हैं। इस प्रचलन से जहाँ घर में धार्मिकता का वातावरण बनता है वहाँ एक प्रत्यक्ष निर्धारण यह भी है कि खाने से पहले परमार्थ के परिपोषण का भी ध्यान रखा जाय। शास्त्रके अनुसार जो

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपनी कमाई आप ही खाता रहता है, वह पाप खानेवाला तथा चोरी करने वाला है।

सदुद्देश्यों को—सत्प्रवृत्तियों को प्राथमिकता देने, उन के परिपोषण—सम्बर्धन की आवश्यकता को अपने निजी उपभोग से भी अधिक महत्व देने की नीति ही 'यज्ञ-दर्शन' है। इसी को अपने दृष्टिकोण एवं व्यवहार में समाविष्ट कर के इस देश के महान् निवासी देवमानव बने और अपनी उत्कृष्टता से न केवल अपने देश को वरन् विश्व वातावरण को सुख शान्ति से भरा-पूरा बनाने में सफल हुए थे। आज की संकीर्ण स्वार्थपरता, निष्ठुरता एवं आपाधापी ने ही अनेकानेक समस्याओं, विग्रहों, विपत्तियों एवं विभीषिकाओं को जन्म दिया है। समाधान के लिए किये जा रहे छुट-पुट, उथले, सामयिक एवं स्थानीय उपाय-उपचारोंसे चिर-स्थायी हल निकलने की आशा नहीं की जानी चाहिए। कीचड़ सड़ती है तो दुर्गन्ध भरे विषाणु और मक्खी-मच्छर उपजते हैं। रक्त में विषाक्तता भर जाने से चित्र-विचित्र प्रकार के फोड़े-चकत्ते उठते हैं। बाह्य उपचारों से क्षणिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लाभ होता है। स्थाई निराकरण के लिए कीचड़ हटाने एवं रक्तशोधन जैसे बड़े कदम उठाने पड़ते हैं। मनःक्षेत्र में घुसी हुई निकृष्टता का निराकरण ही व्यक्ति को महान् एवं समाज को सुसंस्कृत बनाने का एक मात्र उपाय है। इस उपाय को जन-जन द्वारा अपनाये जाने की प्रेरणा को अग्निहोत्र अपने अन्तराल में सँजोये हुये हैं। प्राचीनकाल में कर्मकाण्ड के माध्यम से लोकशिक्षण के जो प्रयोग चलते थे उनमें यज्ञ प्रक्रियाको प्रमुख माना गयाथा। उस माध्यम से यज्ञ दर्शन को जन-जन के मन-मन में उतारने का प्रबल प्रयत्न निरन्तर चलता रहता था। इस सदुद्देश्य के लिए समय-समय पर छोटे-बड़े यज्ञ कृत्यों का सिलसिला निरन्तर चलता रहता था। क्रिया के साथ प्रेरणा से ही धर्म-कृत्यों की पूर्णता एवं समग्रता बनती है।

यज्ञ दर्शन की अवधारणा यदि ठीक तरह जनमानस में प्रतिष्ठापित कराई जा सके तो इतने भर से प्राचीनकाल जैसे स्वर्णयुग—सतयुग को वापिस ला सकना सम्भव हो सकता है। प्रचलित अनेक वादों में 'यज्ञवाद' की गरिमा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सर्वोपरि है, उसमें व्यक्ति और समाज के समग्र उत्थान की सर्वतोमुखी सम्भावनायें विद्यमान हैं। यही कारण है कि आदिवेद-ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में यज्ञाग्नि को पुरोहित—मार्गदर्शक कहा गया है। बताया गया है कि याज्ञिक रत्न-राशि से भरे-पूरे देवमानव बनते हैं। इस कथन की सचाई असंख्य महामानवों द्वारा अपनाई गई जीवन-नीति और उसकी परिणति को देखकर सहज ही जाना जा सकताहै।

यज्ञाग्नि की कई परोक्ष शिक्षायें हैं, जैसे—(१) अग्नि जब तक जीवित है तब तक गरम और प्रकाशवान् बना रहता है। अग्नि पूजकों को सक्रिय एवं प्रकाशवान् बनकर रहना चाहिए। (२) अग्नि के निकट जो भी जाता है, वह उसी के तत्सम बन जाता है। हमें चन्दन वृक्ष की तरह सम्पर्क में आने वाले को भी ऊँचा उठाने का प्रयत्न करना चाहिए। (३) आग्नि का मुख कभी नीचा नही होता। दबाव पड़ने पर भी ऊँचा ही बना रहता है। अग्नि-पुरोहित के इस उदाहरण-उपदेश का आह्वान करके हमें भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने व्यक्तित्व को निकृष्ट नहीं बनने देना चाहिए । (४) अग्नि को जो भी प्राप्त होता है, उसे अपने लिए संग्रह नहीं करता वरन् तत्काल विश्व वातावरण में वितरितकर देता है । हमें संग्रही नहीं उदार, परमार्थरत होना चाहिए । (५) यज्ञावशिष्ट भस्म है, जो बताती है कि जीवन का समापन भस्म मात्र अवशेष रहजाताहै । अस्तु न तो वैभव का गर्व करना चाहिए, न लोभ-मोह से ग्रस्त होना चाहिए और न मरण का विस्मरण करना चाहिए । जो इतना कर सकेगा—उसके जीवन की सार्थकता में सन्देह नहीं रह जायेगा ।

पर्वों में होली की प्रमुखता इसलिए मानी गई है कि उसे नवान्न की फसल आने पर सामूहिक वार्षिकोत्सव के रूप में विशाल यज्ञ आयोजन के साथ मनाया जाता था । उपलब्धियों का अधिकतम उपयोग लोकमंगल के लिए—यही है 'यज्ञ दर्शन' । स्वयं न खाकर श्रेष्ठ वस्तुओंको वायु-भूत बनाना और उसे विश्वभरमें अशुभ निवारण एवं सुख सम्वर्धन के लिए वितरण कर देना—इसी उद्देश्य को

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लेकर यज्ञ किये जाते हैं । यह प्रयोजन इतना महान् है कि यदि लोक मान्यता में, जन परम्परा में इसे स्थान मिल सके तो समझना चाहिए कि सतयुग के वापिस लौट आने में कोई सन्देह या अवरोध शेष नहीं रह गया । होली पर्व एवं अन्य समुदायिक शुभारम्भों, हर्षोत्सवों में यज्ञ कृत्य को प्रमुख धर्मानुष्ठान की तरह प्रयुक्त करने के पीछे यह रहस्य सन्निहित है कि उपस्थित समुदाय को इस भावना से परिचित एवं प्रभावित किया जाय ।

यज्ञ प्रक्रिया में आत्मबल का अभिवर्धन, पापों का प्रायश्चित्त, व्यक्तित्व की प्रखरता, दिव्य क्षमताओं का उभार, अतीन्द्रिय क्षमताओं का विकास, दैवी अनुग्रह की उपलब्धि जैसे अन्य रहस्यमय कारण भी सन्निहित हैं । अनेक कामनाओं की पूर्ति के लिए अनेकों स्तर के यज्ञानुष्ठानों का विधान है । ब्राह्मणत्व की प्राप्ति में यज्ञ प्रक्रिया को उच्चस्तरीय विधान के रूप में निरूपित किया गया है । अनुष्ठानों की पूर्णता, जप के अनुपात से अग्निहोत्र करने के साथ जुड़ी है । गायत्री अनुष्ठानों की पूर्णाहुति में अग्नि

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होत्रको आवश्यक मानागयाहै। जपऔर यज्ञकी पारस्परिक सघनता और अविछिन्नता विज्ञजन सदासे जानते और मानते रहे हैं।

यज्ञ का एक भौतिक पक्ष भी है। शारीरिक रोगों का निवारण, मानसिक सनकों, उद्विग्नताओं एवं विक्षिप्तताओं का निराकरण, वायुमण्डल का संशोधन, वातावरण का परिष्कार, अन्तरिक्ष से उपयोगी पर्जन्य वर्षा, प्राणियों पर उपयोगी प्रभाव, वनस्पति जगत का उन्नयन अभिवर्धन, विषाक्तता से छुटकारा जैसे कितने ही लाभ ऐसे हैं जिन्हें भौतिक विज्ञान के आविष्कारों की तुलना में कम नहीं, वरन् अधिक उपयोगी ही माना जायेगा। वैदिक और तान्त्रिक यज्ञों की रहस्यमयी प्रक्रियायें इसके अतिरिक्त हैं, जिन में व्यक्ति, समुदाय, परिस्थिति को प्रभावित करने, अनुकूलताओं को खींच बुलाने, प्रवाह को उलट देने जैसे कितने ही चमत्कारी परिणाम उत्पन्न होते हैं। समय दूर नहीं, जब अग्निहोत्र की गणना प्राचीनकाल की तरह इस युग में भी प्रचण्ड शक्ति के रूप में गिनी जाने लगेगी। इस

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन्दर्भ में शान्तिकुंज गायत्री नगर का 'ब्रह्मवर्चस् शोध-संस्थान' अनोखे प्रयोग परीक्षण कर रहा है। उच्चशिक्षा प्राप्त अनुभवी वैज्ञानिकों की एक टीम इस कार्य में जुटी हुई है, उनके द्वारा हुई अब तक की प्रगति से यह विश्वास सुदृढ़ होता है कि एक खोई हुई कड़ी को जल्दी ही पुनः उपलब्ध किया जा सकेगा और यज्ञ को अध्यात्म क्षेत्र की तरह ही भौतिक विज्ञान के क्षेत्रमें भी उच्चस्तरीय सम्मान मिलेगा।

आज की परिस्थिति में यज्ञायोजनों को देव संस्कृति का प्रत्यक्ष प्रदर्शनात्मक रूप प्रस्तुत करने के रूप में भी आयोजत किया जा सकताहै। प्रतीकों के माध्यम से प्रशिक्षण करने की पद्धति सभी क्षेत्रों में विद्यमान है। मन्दिरों में प्रतिष्ठापित देवप्रतिमायें भी इसी प्रयोजनकी पूर्ति करती हैं कि दृश्य के सहारे आस्तिकता का दर्शन हृदयगम किया जाय और भक्ति भाव उभारा जाय। देव-संस्कृति के तत्व दर्शन को यज्ञायोजनों के साथ समझने, समझाने में असाधारण सहायता मिल सकतीहै।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन दिनों धार्मिक आयोजन घर-घर, समय-समय पर, स्थान-स्थान पर करते रहने की नितान्त आवश्यकता है। इसके लिये अग्निहोत्र से बढ़कर सरल, सस्ता, प्रभावी और उपयोगी कार्यक्रम दूसरा नहीं हो सकता है। इसमें सामूहिक श्रमदान, पारस्परिक सहयोग, मिल-जुलकर प्रयास एवं सम्मिलित प्रयत्नों का सदुद्देश्यों के लिए नियोजन जैसे कई प्रयोजनों की साथ-साथ पूर्ति होती है। प्राचीन-काल में विभिन्न प्रयोजनों के लिए बड़े सम्मेलन बुलाये जाते थे तो उनका स्वरूप यज्ञ-समारोह सम्पन्न करने के रूप में ही हुआ करता था। उनदिनों राजनैतिक उद्देश्यों के लिए राजसूय, अश्वमेध आदि आध्यात्मिक प्रयोजनों के लिए सर्वमेध, बाजपेय यज्ञों की विशालकाय व्यवस्थायें बनती थीं और उस आधारपर किये गये निर्धारण विशाल जन समुदाय को—व्यापक वातावरण को प्रभावित करते थे।

विविध प्रयोजनों केलिए जन सामान्य में प्रेरणा भरने के सशक्त माध्यम यज्ञायोजन ही रहे हैं। उनमें सम्मिलित

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होने एवं सम्पर्क में आने वालों के मन में लोकमंगल की भावना सहज ही हिलोरें लेने लगतीं, संकीर्णता की परिधि को तोड़ निकलसे की प्रेरणा उठतीहै । वातावरण के परिशोधन एवं अनुकूलन में तो असामान्य योगदान मिलता ही है। सूक्ष्म वातावरण भी ऐसा बन जाता है कि हर किसी के भीतर देव प्रवृत्तियाँ उभरने लगती हैं । आर्ष साहित्य में उल्लेख मिलता है कि जब कभी भी परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो जाती थीं, वातावरण में अवाँछनीय तत्वों का बाहुल्य हो जाता था, मानवी पुरुषार्थ उनके परिशोधन में असमर्थ सिद्ध होते थे तो ऐसे विषम अवसरों पर एकमात्र उपचार यज्ञायोजनोंका अपनाया जाता था । फलतः वातावरण परिशोधित एवं अनुकूलित हो जाता था । जिनदिनों महाभारत का युद्ध समाप्तहुआ—नरसंहार से समस्त वातावरण ही विक्षुब्ध हो उटा । हर व्यक्ति उद्विग्न, उतावला एवं मरने मारने पर युद्ध के बाद भी उतारू रहता था । ऐसे में भगवान कृष्ण ने युधिष्ठिर को विशाल यज्ञ करने का परामर्श दिया । यज्ञ सम्पन्न होने के बाद कहीं जाकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिस्थितियाँ इस योग्य बनी कि हर कोई सुख-शान्तिपूर्वक रह सके। अन्य प्रयोजनों के लिए भी समय-समय पर विविध प्रकार के यज्ञों की ही महत्वपूर्ण भूमिका होतीथी।

प्राचीनकाल के उन समस्त प्रयोजनों की पूर्ति आज 'गायत्री यज्ञों' से हो सकती है। नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए किये जाने वाले छोटे-बड़े सभी आयोजनों में गायत्री यज्ञो की प्रमुखता रहनी चाहिये। पर्व-संस्कारों में, पारिवारिक समारोह, शुभारम्भ, हर्षोत्सवोंमें गायत्री यज्ञोंको आगे रखकर चलने से हरदृष्टि सेही सुविधा, प्रसन्नता और सफलता की आशा की जा सकेगी। परिवारों में धार्मिकता का वातावरण बनाने में इसप्रक्रिया का असाधारण योगदान रहेगा। निजी उपासना से लेकर सामूहिक अनुष्ठानों में गायत्री यज्ञों को प्रमुखता मिलनी चाहिए। गायत्री परिवार की पद्धति से किये जानेपर वेअत्यन्त सस्ते, प्रभावी, आकर्षक एवं उच्चस्तरीय उद्देश्यों की पूर्ति में सर्वथा समर्थ सिद्ध होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्मरण रहे गायत्री देव-संस्कृति की जननी और यज्ञ धर्म का पिता है। भारतीय परम्पराओं के प्रति आस्था रखने वाले सभी उदारचेताओं को गायत्री और यज्ञ का आलोक प्रचलन व्यापक बनाने के भाव भरे प्रयत्न करने चाहिए।

मुद्रक—युग निर्माण योजना, मथुरा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अग्निहोत्र देव संस्कृति का—भारतीय धर्म का एक अनिवार्य अंग रहा है। नैतिक एवं सामाजिक शिक्षण, शारीरिक एवं मानसिक उपचार सूक्ष्म वातावरण शोधन एवं आस्था उन्नयन जैसे अनेकों लाभ इस अध्यात्म उपचार से अर्जित किये जाते हैं। इस प्रक्रिया की गरिमा को समझने व जन-स्तर पर इसे प्रतिपादित किये जाने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

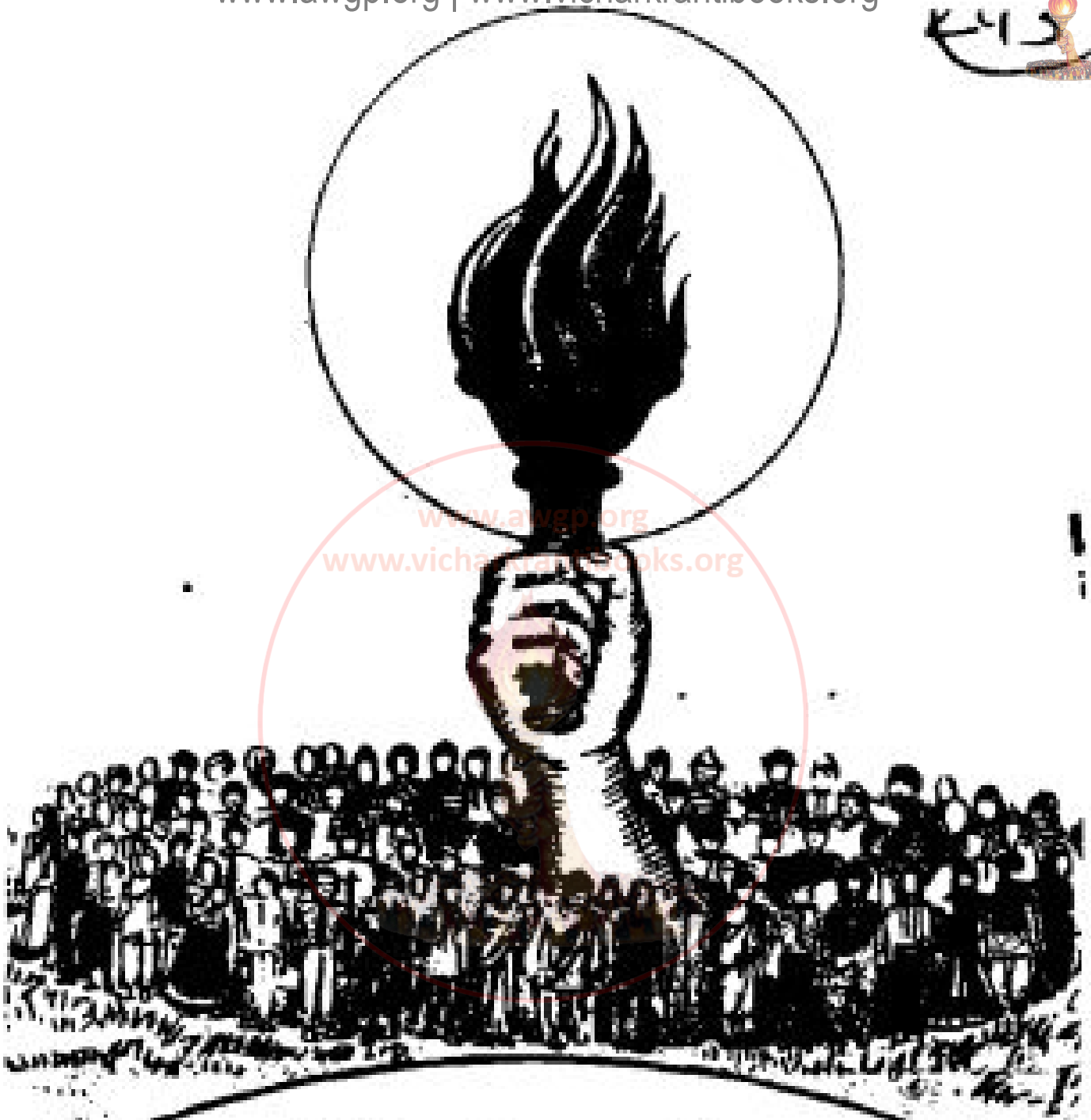

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि - मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org